!! जय भिक्षु !! !! जय महाश्रमण !!

मैत्री पर्व का संदेश–बाहर से भीतर आने का

पर्युषण महापर्व 2012

सुनाम – महातपस्वी, युवामनीषी, शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की आज्ञानुवर्ती शासन श्री साध्वी सोहनकुमारी जी छापर के सान्निध्य में उल्लासमय वातावरण में पर्यषण महापर्व का आयोजन किया गया।

साध्वी श्री जी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में श्रावक समाज को विशेष बलवती प्रेरणा देते हुए कहाः– यह पर्युषण महापर्व आध्यत्मिक पर्व है। इसकी अराधना–साधना से जीवन पवित्र उज्जवल बनता है। सम्वत्सरी के पूर्व सात दिनों का जो समय हमारे जैनाचार्यो ने निर्धारित किए, वे एक प्रकार का दही जमाने का कार्य है। उसमें पूर्ण रूप से साधक अपने आपको तैयार कर लेता है, नवनीत निकालने के लिए। यह मैत्री पर्व त्रुटियों को देखने के लिए विशेष प्रेरण देता है। एक वर्ष के अर्न्तगत हमारा किसी के साथ मन–मुटाव हुआ है प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में, तो उनसे अन्तर्मन ससरल हदृय के साथ आपस में खमतखामणा कर लें। समवत्सरी पर्व का महत्व केवल जैनों के लिए ही नहीं, यह तो प्राणी मात्र के लिए त्राण एवं शरण देने वाला पर्व है। अतः हम पर्व की महत्ता का अंकन करते हुए प्राणी मात्र के प्रति मंगलकामना करेंगे, कि अध्यात्म के पथ पर आगे बढें।

केन्द्र द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों के साथ सारे कार्यक्रम व्यवस्थित रूप में चलें। साध्वी श्री लज्जावती जी, साध्वी श्री लावण्य श्री जी, साध्वी श्री सिद्वान्त श्री जी ने भगवान महावीर का जीवन, महावीर के पूर्व 27 भव एवं निर्धारित विषयों पर अपने अपने विचारों की अभिव्यकियां दी।

पर्युषण पर्व के अर्न्तगत सुनाम की तेरापंथ युवक परिषद् के द्वारा विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के विषय कुछ इस प्रकार है।

दिनांक 14 अगस्त 2012 "पर्युषण की पहली शाम जैन ज्ञान प्रशनोतरी एवं 24 तीर्थकरो के नाम"
दिनांक 15 अगस्त 2012 "भिक्षु को जानो पहचानों एवं भिक्षु भजन संध्या"
दिनांक 16 अगस्त 2012 "गीतों के रंग किस्मत के संग एवं म्युजिकल धार्मिक तम्बोला"
दिनांक 17 अगस्त 2012 "महात्मा महाप्रज्ञ एवं जय जय महाश्रमण क्वीज कॉन्टेस्ट"
दिनांक 18 अगस्त 2012 "बिना डॉक्टर और दवा के स्वस्थ बनो एवं खुला प्रशनमंच"
दिनांक 19 अगस्त 2012 "बुझो तो जाने किसमें कितना है दम"
दिनांक 20 अगस्त 2012 'स्मृति के झरोखे से एवं 1 मिनिट प्रतियोगिता"

!! चरणों को गतिमान बनाएं, सपनों को साकार बनाएं !!

ये प्रतियोगिताएं अत्यंत रोचक एवं ज्ञान बढाने वाली रही। कुल 20 प्रतियोगियों ने भाग लिया, सभी प्रतियोगियों को 5 गुपो में विभाजित किया गया। 7 दिनों की प्रतियोगिताओं में भिक्षु ग्रुप ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। तेरापंथ युवक परिषद् के द्वारा पांचो ग्रुपो को सम्मानित किया गया।

सप्तदिवसीय प्रतियोगिताओं का कुशल संयोजन तेरापंथ युवक परिषद् के कार्यकर्ता हितेश जैन ने बहुत ही रोचक ढंग से किया।

दिनांक 22.8.2012 के प्रातःकालीन क्षमायाचना का कार्यक्रम श्रावक समाज में सामूहिक रूप से किया गया। साध्वी श्री जी ने अत्यंत मार्मिक शब्दों में कहा– आज का यह क्षण नवनीत को प्राप्त करने का है। अपने अन्दर में झांककर देखने का पर्व है। भगवान महावीर की वाणी को सार्थक करते हुए मैत्री पर्व को सफल बनाएं।

सभी कार्यक्रमों में उल्लेखनीय उपस्थिति रही:–
समवत्सरी पर्व पर अष्टप्रहरी पौषध 19 एवं चतुःप्रहरी 21 पौषध हुए।
अभिनव सामायिक समूह रूप में एक साथ 165 सामायिक हुई।
सामायिक पचरंगी:– 3 मौन की पचरंगी, 31 सामायिक के तेले, 40 परिवारों में 3–3 घंटे का जाप जिसमें लगभग 1000 के करीब सामायिक हुई। इस प्रकार साध्वी श्री के सान्निध्य में सारे कार्यक्रम व्यवस्थित चले उमंग भरे वातावरण में।

Yours Faithfully,
All TYP Members,
President – Kapil Jain.
Secreatery – Sumit Jain.
Hitesh Jain (090413-99764).

Date of Sent:- 25-8-2012.

****